

की रीतों के रूप में गोना जाता है। लोग जानते हैं कि उनका आचरण बानून और राज्य की दृष्टि में अपराध है फिर भी बुरी-सी रूप से लम्बरी राज होती है। समाज में भी ऐसे घनब वृत्त हैं जो बानून की दृष्टि में अपराध होते हुए भी सामाजिक परम्पराओं के विरोधी हैं।

राज्य और बानून में व्यक्ति लाख समझ लब नहीं बस सकता है, घन गदगदराय की ऐसी बाई नहीं बान चाहिए। अपने इस घट्ट आचरण के लिए व्यक्ति को राजा बदल्य मिलती है। समाज विरुद्ध बाय करने में सामाजिक प्रतिष्ठा गिरती है और सामाजिक बहिष्कार दिया जाता है। इसमें मानसिक क्षति नष्ट हो उ नो और व्यक्ति का जीवन दुःखमय हो जाता है।

जो बाय राज्य और समाज की दृष्टि में अपराध हो परन्तु धर्म की दृष्टि से नियम हो तो राज्यदा स्थापन करना चाहिए। (हम मूल्य के नीचे, सभ्यता के, बदलार बाई बदल दृष्टि है। धर्म विरुद्ध बाय करने से व्यक्ति के जीवन)



यदि मानव को सुखी और गान्धर्व बनना है तो फिर
 । व्यर्थी होकर पस की भूत कम करने होगा । अभी वह
 जीवन में आत्मवित्तन एवं आध्यात्मिक विषय में निवे
 बुद्ध कर पायेगा । संतों ने जो कहना है वह (उ) धर्म
 ऐसा है कि—

तर्हि इतना दीजिये जाम बुद्धि ममाय ।
 मैं भी भूता न रहूँ गाधु न भुजा जाय ॥

परिवार के व्यक्तियों को भी ऐसा ही तर्क *Trained*
 किया जाय कि वे भी व्यर्थ व व्यसन पान एवं सुख
 सिद्धा में न उलझे । बच्चे सहकर भी पस व पद को
 और आश्रित न हो । बर्माई व अन्याय ही अपना काम
 मान रहन-सहन रखें । दास दिलाव का न बना स्वयं हो
 अपने जीवन में धर्म की समस्या नही रहती । जीवन
 व्यर्थ एवं बिना सदा प्रसन्न रहना है । इच्छा व मांशिक
 मज्जा बढ़ती है और व्यक्ति धर्म का मार्ग ग्रहण होता है ।
 हमें यह हिंद कि सिद्धि दी है जो और इच्छा को को
 न कर सके सुख को प्रदान करे ।

यदि मानव को सुखी धीरा गान्धर्व बनाने की शिक्षा दी जायगी तो वह भी भूरा कम करने में सक्षम होगा । तभी वह जीवन में आत्मचिन्तन एवं आध्यात्मिक विकास के लिए कुछ कर पायेगा । संतों ने मोक्ष वन्धन का बहुत ध्यान रखा है कि—

साँझ इतना दीजिये जाम बुटुम्ब मगाय ।
 मैं भी भूखा न रहूँ माधु न भुगा जाय ॥

परिवार के व्यक्तियों को भी ऐसा ही तय कर Trained जा जाय कि वे भी व्यय का व्यसन पालन एवं सुख का भोग न उलझे । बाप्ट सहकर भी पाप का पक्ष न आविष्ट न हो । बसाई का मनसार हो अपना काम करने-सहन रखें । बाप्ट दिलाव का न बना लय हो जीवन में धर्म की समझा नीती रहनी । जीवन एवं चित्त सदा प्रसन्न रहना है । ईश्वर का आश्रित रहना है और धर्म का भी धारण रहना है । चाहिये कि निरालस मन और हृदय को वांछित सुख को प्राप्त कर ।

जीवन की परिस्थितियाँ परिवर्तनशील हैं। इन सभी का प्रति सदमाय घोर सेवा का भावना है। किसी को कभी बचन नहीं बहू घोर न हो किसी का दुःख दुःख घोर फिर स्वार की भावना रख। जो व्यक्ति जिस जीवन का उचित सेवा भवित करना है उसे जानना है। जो वही समय का घण्टिकारी बनता है। जीवन का मर्म है। यह मानव एक दिन सभी को इस समय में जाना है। *Man is mortal* मानव मरणशील है। धन पुनः वही मरण नहीं करता। सदा सार्वभौम ही साथ जता है। बहा है

मीठा बोलो नमः धर्म सदा सार्वभौम

कितने दिनों का जीवन बचन न बहा है।

बाणी में मधुरता एवं व्यवहार में नरम भावना ही धर्म का सार है। यह जीवन का धर्म है जो हमें सदा ही हमें धारणभूत ज्ञान का जहाँ तक हमें मर्म है - हमें ही एवं जरूरत में ही का सदा सार्वभौम धर्म है।

कृतज्ञता

उपकारी के उपकार का मानना कृतज्ञता है और उसे
 भूल जाना उपकार का बदला अपकार में चुकाना है। कृत-
 ज्ञता गुण है, कृतघ्नता दोष। जीवन में किसी भी तरह
 की मदद देने वाला व्यक्ति उपकारी कहलाता है। उसका
 द्वारा की गई मदद का हमारा याद रखना उपकार उपकार
 को मानना कृतज्ञता का गुण है। जीवन में यह गुण अनिवार्य
 आवश्यक है।

हम अपने द्वारा किसी पर किये उपकारों का भूल जाना
 याद रखते हैं किन्तु दूसरों के द्वारा अपनी उपर किये गये
 उपकारों को भूल जाते हैं। परिणाम यह होता है कि हमारा
 यह भाव बढ़ जाता है किन्तु दिनचर्या भूल जा जाता है
 उपकारियों के प्रति जो आदर भाव मानसु रहना चाहिए
 वह गरीब रहता, समय आने पर उनकी सेवा-सहायता आदि
 के द्वारा उनके उपकारों का प्रतिफल प्रत्यापन भी नहीं
 कर पाता। उपकार को मानने वाला ही उपकार का हमारा
 कर्म पर सुहावना है।

लोकप्रियता

लोकप्रियता व्यक्ति के व्यवहार की कसौटी है। दूसरी
कसावट उसका व्यवहार कैसा है? इसका ज्ञान उसकी
लोकप्रियता में हो जाता है।

लोकप्रिय बनना आसान बात नहीं है। इसमें लिये
सबकुछ के जीवन-निर्माण की आवश्यकता है। जीवन
में बुद्धि, मर्यादा, जमे-परोखार, सदाचार, विनय-नम्रता,
सफाई, सरलता आदि का होना अति आवश्यक है।
जिनका जीवन ऐसे मर्यादों से महकता है। उन्हें कौन
नही चाहता?

परिवार का अर्थ है सभी आत्माओं की आत्मतुल्य
समझकर परपीडा की निजपीडा एवं परहित की निजहित
समझना। तथा ऐसा समझकर निस्वार्थभाव से दूसरों के
दुःखदह में गहयाही बनना व अकारण मादों की मदद करना।
इस व्यक्ति में यह गुण पा जाया है वह बहुत अच्छी की
प्रिय लगता है। यही वह शक्ति है जिससे लोकप्रियता
प्राप्त होती है। सब की दिव्य शक्ति के इस पर एक

। इसमें घादर के बजाय लोगो से तिरस्कार एवं
 परिहास ही प्राप्त होगा। वैसे कटुवादी से लोग दूर ही
 रहना पसंद करते हैं। कौआ किसी का बया लेता है और
 फिर किसी को बया देता है ? किंतु कोयल सबको अच्छी
 माने है और कोए को भगा देने का मन होता है। यह
 मधुर और कटुवादों का ही प्रतीक है। अतः हमेशा मधुर
 वियोग्युत एवं ठीक बातें बोलना चाहिये ताकि सुनने
 वालों का मन सन्तुष्ट और प्रसन्न रहे।

घायला साब में व्यक्ति की तो निन्दा होती ही है
 साथ साथ उगके जानि, कुन घम की भी वह निन्दा कर-
 दाता है। लोगों का घम की ओर प्रवृत्ति करता है।

साबप्रिय बनना सभी चाहते हैं साथ भी चाहते हैं। ता-
 कि रसिये कि इन मद्गुणों का जीवन में लाना आवश्यक
 है। तभी मधुरी मोक्षप्रिया प्राप्त होगी। साथ घमनी
 मोक्षप्रिया के साथ-साथ न कोई लोगों का जीवन बना सकत
 है। यह घम की राह पर चलना शक्य है। अतः प्रत्येक
 व्यक्ति को चाहिए कि इन दो गुणों के नियंत्रण

बात की शरम है । कुछ लोग और बताते हैं कि नारी
 में शरमाने हैं किन्ती के घर जान जायग ना म
 टटकर आयग । तब तो तब 'बमो' हा ३११ मिह
 रचना पश्य वेग वा त्रिनय मया गी करत क ३१
 पाप छिपाना धम काय करना ३२५ ३३६ ३४७
 करना लाभ क ३२२ ३३३ ३४४ ३५५

सुखशाखा २२ ३ ३४४ ३५५ ३६६ ३७७ ३८८ ३९९
 मय हा नी पाप करने न दखत है दिव क 'ब' न
 पाप न कर तब क्या लाभ ३४५ ३५६ ३६७ ३७८
 भूत ज न है बि ६ ३८६ ३९७ ४०८ ४१९ ४२० ४३१
 तब मयह टा ३ ३४४ ३५५ ३६६ ३७७ ३८८ ३९९
 ती नी दखत जह दखत प्रवर्तित क वर ३४५ ३५६ ३६७ ३७८
 द्यादत यह ज ता है ३४५ ३५६ ३६७ ३७८ ३८९ ३९० ४०१
 दूर रहता है । यम हा ता ती न न ता ३४५ ३५६ ३६७ ३७८
 पाप न दूर रहता ३४५ ३५६ ३६७ ३७८ ३८९ ३९० ४०१

दाम ३४५ ३५६ ३६७ ३७८ ३८९ ३९० ४०१
 म दारी दूर ३४५ ३५६ ३६७ ३७८ ३८९ ३९० ४०१
 मयका है ।

जरा जरा भी क्षान में कुछ एव नाराज होने वाला व्यक्ति स्वयं भी परेशान रहता है तथा दूसरों के लिये भी परेशानि का कारण बनता है। इसे कोई चाहता नहीं। स्वयं स्वभाव के चिढ़ चिढ़ेपन के कारण दूसरे व्यक्ति स्वयं पाप मान, बठने और बोलने में भी हिचकिचाते हैं।

कति व्यक्ति दूसरों के अवगुणों अवगधों के प्रति हठान्ध ध्यान भावयित्त करणा, जिससे सुनने वाले को रोष नहीं बिनु अपनी भूल का एहसास होगा सज्जा का अनुभव होगा। उसके स्वभाव की मधुरता दूसरों का बाध देगी। उसके बजाय दूसरों के अवगुणों एवं अपराधों के लिये गुस्से में आकर बहने या सुधारने की चेष्टा करने में सामने वाले व्यक्ति को कलह मशगूल हान व बजाय बाध आवेगा एवं वह भाग्य कर बैठेगा।

जबदा क्षान प्रकृति क्षान स्वयं भी आसानी से गुस्से आना है। उस बहने की हिम्मत नाई भी कर सकता है। क्षानी में नाई क्षान भी पान नहीं करता।

होना क्षान क्षान के क्षान क्षान क्षान है। क्षानक्षान क्षान

क्रोध कृणानुधत्पश्चादुच्य दहित वा न वार अर्थात् क्रोध
 रग्न होकर सबसे पहले अपने आश्रय स्थान को जला
 है। यह जब मन में घुमता है तो व्यक्ति का विवेक
 भी बुझि जाती जानी है। क्रोध व्यक्ति के अहंकार को
 टस पसंवाता है। घायल अहंकार ही क्रोध के रूप में
 परिवर्तित होता है। क्रोध एक आवेग है जो विभिन्न रूपों
 में प्रकट होता है। क्रोध का शरीर और मन दोनों पर
 प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। क्रोध धात्मा का शत्रु है।

मुजरान जैसे महान व्यक्तियों ने क्रोध पर विशेष
 ध्यान और सख्खता से विजय पायी थी। क्रोध का विजय
 पाने के नियम आत्म संयम की आवश्यकता होती है। क्रोध
 को मौन रहकर टाला जा सकता है। क्रोधी व्यक्ति को डर
 की अनुभाव रसा जाय और उस काय की हानियों का
 स्मरण करवाया जाय। क्रोध को सतत तब तब से
 जीता जा सकता है।

क्रोध के आवेग से व्यक्ति विवेक को हार देता है और
 बुरी-बुरी ऐसे काम कर देता है जिन्हें बाद में पछताया

पसके। सोने का हरिण होना असंभव है फिर भी राम
 तू में पकड़कर उसके पीछे भागे और जिसका दुखदायी
 न दृष्टि भुगतना पड़ा।

समाज के जितने नाते रिश्ते हैं व सब मोह की भावना
 से ही बंध हुए हैं। यह मेरा ह, यह मेरा ह की भावना
 माह की ही प्रतीक है। सभी आयु वग व व्यक्ति मोह की
 मोह में मुवातित होत रहने हैं। यह मोह धीरे धीरे
 बढ़ता ही जाता है। एक स्थिति तेसी आती है कि जिग वस्तु
 व प्रति माह बढ़ जाता है उससे अपने को दूर रखना ही
 नही होता है और उसके अभाव में जीवन दुःखमय
 जाता है।

व्यक्ति का माह के लक्षण में विचार करना
 चाहिए। माह की आसक्ति दुःख का कारण बनती है।
 हमने व्यक्ति अपने कामों का पालन नहीं कर सकता
 है और आसक्ति के कारण ही होता है। एक छोटी पर
 दिवस पहले के मित्र हर समय मिलता रहता है। माह
 मोह के कारण ही कुछ दूर हो गया है। माह की दूर
 दूर है। दूर है।

एक बार जब किसी के मन में ईर्ष्या की भावना पैदा हो जाती है तो वह उस व्यक्ति के मन में उचनी पैदा करता रहती है। उस बेचनी के क्षणों में व्यक्ति ईर्ष्या के शीघ्र होकर किसी भी प्रकार का काम कर सकता है। ईर्ष्या १ व्यक्ति स्वयं अपना तो पतन करना ही है वह मारे मानव समाज के लिये समस्या बन जाता है।

व्यक्ति को ईर्ष्या की भावना से दूर रहना चाहिए। किसी से भी क्यों ईर्ष्या की जाय ? हमें अपनी कबि छोड़ देना है साथ जीवन में गौरव अनुभव करना चाहिए। ईर्ष्या हमारे मन को जड़ है हमें मन से मुक्त होना चाहिए। मन को मनु प्रवृत्तियों से मुक्त होना चाहिए। हम ईर्ष्या की भावना प्राप्त से भा नहीं पड़ना चाहिए व्यक्ति का जीवन सुखमय हो जाएगा।

कामराग ही तीव्रता व्यक्ति को घ घा बना देती है। उसके गले सत्व को सत्त्व कर देती है। उसका धय, साहस आदि सत्त्वों को नष्ट कर देती है। काम की शक्ति काल से भी म्हाव होती है रावण जैसे महान व्यक्तित्व के घनी को भी इस कामराग ने सीताजी के सम्मुख कायर, कमजोर बनाकर बर्बाद कर दिया।

कामराग को जीतनेवाला व्यक्ति ही जीवन में सुखी बना है। उसके जीवन में किसी तरह की बेचैनी या परेशानी नहीं रहती। भागों की तृप्णा प्रायः क तुल्य है। अतः योगत म्हातु ता पा जाती है कि तु तृप्ति नहीं प्राप्ती। व्यापत्ता प्राप्ती के घातबधु ब द कर उस विवकभूय होता है जिससे उस मान नहीं हो पाता कि कामराग व्यापत्ती मुक्तों के साथ दु ख भी रहा हुआ है, और वह जाना भी उस पर घातमण कर सकता है।

कामराग का जीवन क विष घात दर्शितो और सात कर रहति द्वय पक्ष अक्षर द्वय सदस्य प्रति पाश्चर्यक है। अतु लो दर्श का पवदता है, फिर अब विचार पदा है उ है फिर उ ल पुर करन का घटन हाहाह पूरे हो ज्ञान तो राग द, ग है पुर न हो तो बच । दु ख और घटानि है, गी ७ ।

